रोज़ा ख़तम करने की दुआ

इफ़्तार के आदाब :- फर्माया कि जो रोज़ः खुर्मे (खजूर) से खोले (इफ़्तार करे), तो उसकी नमाज़ का सवाब चार सौ नमाज़ से ज़्यादः होगा और पानी से रोज़ः खोलने पर दिल के गुनाह धुलते हैं। जो कुनकुने पानी से रोज़ः खोलता है, तो उसका मेअदा मज़बूत होता है और ऑंखों की रौशनी ज़्यादः होती है और गुनाह धुल जाते हैं।

हज़रत रसूल-ए-ख़ुदा (स॰) रूतब (खजूर) या हलवा या सब्ज़ी से रोज़ः खोलते थे और जब यह न मिलता था, तब हल्के गर्म (कुनकुने) पानी से रोज़ः खोलते थे। फर्माया कि जो रोज़ः खोलने के वक़्त एक लुकमा रोटी किसी ग़रीब को दे, तो ख़ुदा उसके गुनाहों को बख़्श देगा और जनाब-ए-इस्माईल (अ०) की औलादों में से एक गुलाम को आज़ाद करने का सवाब देगा। दिन और रात मे बेहतरीन अअमाल क़ुर्आन-ए-मजीद की तिलावत है। क्योंकि वह इस महीने में नाज़िल हुआ। हर चीज़ की एक बहार है, क़ुर्आन पढ़ने की बहार रमज़ान के महीने में है। फर्माया सलवात, इस्तिग़फार और ला इलाहा इल्लल्लाह बहुत कहे और दिन व रात के नाफलों को न छोड़े। ताक (अर्थात वह तारीख़ें जो दो से विभाजित न हों) रातों में गुस्ल सुन्नत है। खासतौर से पहली, पन्द्रह, सत्रह शब-ए-क़द्र और आख़िरी रात में। फर्माया सहर (सुबह रोज़ः रखने से पहले का खाना) और इफ़्तार (शाम रोज़ः खोलने के वक़्त का खाना) के बाद सूरः-ए-इन्ना अनज़ल्नाह पढ़े और इफ़्तार के वक़्त कहे :-

"या अज़ीमो या अज़ीमो अनता इलाही ला इलाहा ली ग़ैरोका इग़फिर ले यज़्ज़नबल अज़ीम इन्नाहू ला मग़फेरूज़्ज़नबल अज़ीमा इल्ललअज़ीम"

{अर्थात् ए बुज़ुर्ग ज़ात ए बुज़ुर्ग ज़ात तू मेरा ख़ुदा है कोई ख़ुदा नहीं मेरे लिए सिवाये तेरे बख़्श दे तू मेरे बड़े गुनाह को यक़ीनन नहीं बख़्श सकती बड़े गुनाह को मगर बहुत बड़ी ज़ात।}

यह भी मिलता है कि इफ़्तार के वक़्त कहे :-

"अल्लाहुम्मा लका सुमतो व अला रिज़्क़ेका अफतरतो व अलैका तवक्कलतो"

{अर्थात् ख़ुदावन्दा तेरे लिए मैंने रोज़ः रखा और तेरे रिज़्क पर इफ़्तार किया और तेरे ही ऊपर मैंने भरोसा किया है।}

ख़ुदा उसको उन लोंगो का सवाब अता करता है, जिन्होंने उस दिन रोज़ः रखा है और जब खाना सामने आये, तो कहे :-

"अल्लाहुम्मा लका सुमना व अला रिज़्क़ेका अफतरना फ़ताक़ब्बल मिन्ना इन्नाका

www.IslamInHindi.org

अनुमति : अब्बास बुक एजेंसी द्वारा प्रकाशित "तोहफतुल-अवाम" से लिया गया ! अपनी किताबों को खरीदने के लिए संपर्क करें abbasbookagency@yahoo.com / अथवा एसेमेस भेजें : +91-941-510-2990

रोज़ा ख़तम करने की दुआ

अन्तस समीअुल अलीम"

{अर्थात् खुदावन्दा तेरे लिए रोज़: रखा हमने और तेरे दिये हुवे रिज़क़ से इफ़्तार किया (रोज़: खोला) हमने। अत: तू इसको हमसे क़ुबूल कर यक़ीनन तू ही सुनने वाला है और जानने वाला।}

और जब पहला लुक़मा उठाये, तो कहे :-

"बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम यावासेअल मग़्फेरातिग़फिरली"

{अर्थात् शुरूअ करता हूँ खुदा के नाम से, जो बड़ा रहमान और रहीम है, ए वसअ (बहुत ज़्याद:) बख़्शिश वाले, मुझे बख़्श दे।}

अनुमति : अब्बास बुक एजेंसी द्वारा प्रकाशित "तोहफतुल-अवाम" से लिया गया ! अपनी किताबों को खरीदने के लिए संपर्क करें abbasbookagency@yahoo.com / अथवा एसेमेस भेजें : +91-941-510-2990